अंतरा-शब्दशक्ति

स्त्री विमर्श

कथा संग्रह

अदिति रूसिया

स्त्री विमर्श

(कथा संग्रह)

अदिति रूसिया

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-86666-51-2

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
शाखा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ - अदिति रूसिया
मूल्य - ४०.०० रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Stri vimarsh by Aditi Rusiya

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

स्त्री विमर्श और मेरे मनोभाव

ये एक ऐसी पुस्तक है जिसमें मैंने उन कहानियों को स्थान दिया है जो कहीं न कहीं स्त्रियों पे हो रहे ज़ुल्म और अत्याचार या फिर उनकी शिक्षा से सम्बंधित हैं। स्त्री होना कोई बुरी बात नहीं। एक स्त्री ही जननी होती है ममता मई हर दुःख अपने अंदर समेटे कष्ट साध्य ज़िंदगी जीते हुए मुँह से उफ़ तक नहीं करती। सब कुछ सहती है चुपचाप जिसका फ़ायदा उठाते हैं लोग और उसे यातनाएँ देते हैं। आज स्त्री शिक्षा बहुत ज़रूरी हो गई। हर स्त्री को पढ़ लिख कर अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए। आज कई गाँव या क्षेत्र ऐसे हैं जहाँ आज भी स्त्री का पढ़ी लिखी होना गवारा नहीं है एक हाथ के घूँघट में रहती है, इस पर्दा प्रथा को भी समाप्त करना चाहिए। कहीं भी आज एक स्त्री सुरक्षित नहीं है। हर पल एक दहशत की ज़िंदगी जी रही है। जहाँ देखो वहाँ आए दिन यौन शोषण के केस सुनाई देते हैं तो कहीं दहेज के लिए आज भी लड़कियों को अपनी जान गवानी पड़ती है। कहीं भ्रूण हत्या जैसे दर्दनाक केस आज भी हो रहे हैं। हर तरफ़ से सिर्फ़ एक स्त्री को कष्ट सहना पड़ रहा है। ऐसा नहीं है कि महिलाएँ ग़लत नहीं होती। आज उनको जो क़ानूनी सुविधाएँ दी गई है कई बार महिलाएँ उसका नाजायज़ फ़ायदा भी उठाती हैं और एक पुरुष दोषी न होते हुए भी दोषी क़रार कर दिया जाता है। अपने आस पास हो रही घटनाओं से प्रेरित हो कर ही मैंने ये कहानियाँ लिखी हैं।

अदिति रूसिया
वारासिवनी

अनुक्रमणिका

1.	दहेज के लोभी दरिंदे	5
2.	धरोहर	7
3.	कड़वा सच	8
4.	संगति	9
5.	संघर्ष	11
6.	संस्कार	13
7.	डर	15

दहेज के लोभी दरिंदे

मोनिका ने अपनी बड़ी बेटी प्रिया की शादी बड़ी ही धूम धाम से की। बड़े अरमानों के साथ उसे बिदा किया। फूल सी नाज़ुक प्रिया का ससुराल वालों ने स्वागत बहुत अच्छे से किया। अभी कुछ ही दिन बीते थे की घर वालों ने अपने तेवर दिखाने शुरू कर दिए। प्रिया ने भी सोचा मुझे भी यहाँ कौन सा अधिक दिनों तक रहना है। छुट्टियाँ समाप्त होते ही मैं यहाँ से बाम्बे चली जाऊँगी। वहाँ मुझे इन गहनों की ज़रूरत भी नहीं। चुपचाप उसने अपने सारे ज़ेवर दे दिए। अपने माँ पापा से भी नहीं कहा। थोड़े दिनों बाद प्रिया बाम्बे चली गई।

अशोक का व्यवहार भी प्रिया के साथ कुछ ज़्यादा ठीक नहीं था। वो उसे हमेशा ताना मारा करता क्या दिया है तुम्हारे माँ बाप ने, कुछ भी नहीं। देखो ज़रा नितिन को ससुराल से कार मिली है। एक फ़्लैट भी गिफ़्ट किया है उसे। तुम देखो क्या दिया तुम्हारे माँ बाप ने। रोज़ रोज़ सुन कर प्रिया के कान पक गए थे।

एक दिन उसने ग़ुस्से में कह दिया क्या नहीं दिया ये बताओ मेरे मम्मी पापा ने। अरे जो कुछ तुम लोगों ने माँगा वो सब दिया अब और क्या दे दें। अभी मेरी छोटी बहन भी है शादी के लिए क्या सब कुछ तुम्हीं को दे देते। तुम्हें घर चाहिए न बस वो भी मिल जाएगा।

प्रिया ख़ुद इतना कमाती थी कि उसे किसी की ज़रूरत नहीं थी उसने दूसरे दिन ही एक फ़्लैट बुक कर दिया। उसके पेपर लाकर अशोक के हाथ में थमा दिए। लो तुम्हें घर चाहिए था न ये रहे घर के पेपर। अब मेरे माँ पापा को मत कोसना।

साल भर भी नहीं हुए थे कि घर में नया मेहमान आ गया। एक प्यारे से बेटे जन्म हुआ पोते को देखने सास ससुर आए तो जम कर वहीं के हो गए। अब क्या था पूरा परिवार किसी किसी बात को लेकर प्रिया को पीटता तो कभी खाना नहीं देते। तंग आकर हारकर प्रिया ने अपनी मम्मी से सारी बातें बताई।

मोनिका और रमेश ने अपनी बेटी की ख़ुशी की ख़ातिर अशोक की सारी शर्तें पूरी करते रहे। उन्हें लगा शायद ऐसा करने से उनकी बेटी का जीवन सुखी हो जाएगा पर नहीं !

प्रिया की दिन पे दिन परेशनियाँ और बढ़ने लगी। अशोक ने इस बार ५० लाख की माँग की। पैसे मिलने पर प्रिया को मार डालने की धमकी दी। प्रिया ने कह दिया मैंमर जाऊँगी पर अब अपने पापा से पैसे नहीं माँगूँगी। तुम जैसे लालची दरिंदे को अब एक भी पैसा नहीं मिलेगा। अशोक ने प्रिया को कमरे में बंद कर ख़ूब पीटा, उसे खाना नहीं दिया उसके बेटे से भी दूर कर दिया। नन्हा राहुल भूख से रोता रहा पर अशोक ने बच्चे को बिलखता छोड़ दिया। अशोक की मनमानी बड़ती जा रही थी उसका पूरा साथ उसकी माँ दे रही थी।

इधर कई दिनों से मोनिका को प्रिया की कोई ख़बर नहीं मिली तो उसे भी घबराहट होने लगी। मोनिका ने अशोक को फ़ोन लगाया। प्रिया कैसी है???

अशोक ने अपनी डिमांड बता दी और कह दिया अगर आपने दो दिनों में मुझे ५० लाख नहीं दिए तो अभी तो ज़िंदा है दो दिन बाद पता नहीं ... बोल कर फ़ोन रख दिया। प्रिया को जब सारी बातें पता चली तो उसने अशोक के दफ़्तर जाते ही बैग उठाया और थाने चली गई। वहाँ उसने अशोक और उसकी माँ के ख़िलाफ़ रिपोर्ट दर्ज करवा दी।शाम को जैसे ही अशोक आया प्रिया ने साफ़ कह दिया अब मैं तुम्हारी धमकियों से डरने वाली नहीं। अब मैं नहीं जो कुछ करेगी पुलिस ही करेगी।पर अशोक ने कुछ और ही सोच

रखा था। उसने पूरी रूप रेखा तैयार कर रखी थी प्रिया को ऊपर पहुँचाने की। रात में खाना बड़े प्रेम से खाया प्रिया के साथ बैठ कर और उसके बाद दोनों कमरे में गए। प्रिया को लगा अशोक डर गया पर ऐसा कुछ न था। तुम आराम करो मैं कुछ काम निपटा कर आता हूँ और थोड़ी ही देर बाद प्रिया की चीख़ कमरे में गूँज उठी .प्रिया जो सोई तो उसने सुबह का सूरज नहीं देखा। अशोक ने उसे गला घोंट कर मार दिया और पंखे से लटका कर एक स्टूल वहाँ रख दिया। बाहर आकर सोफ़े पे सो गया।

सुबह ज़ोर ज़ोर से हल्ला मचाने लगा सारी बिल्डिंग के लोगों को माँ ने इकट्ठा कर लिया। मेरी बहु ने फाँसी लगा ली चली गई का रोना पीटना मचा दिया। जब ख़बर प्रिया के माता पिता को लगी तो उनके धो होश ही उड़ गए कहाँ वो अपनी बेटी की ख़ातिर पैसे ले कर निकल चुके थे उन्हें क्या पता था कि इन *दहेज के लालची दरिंदे* सुबह होने का भी इंतज़ार न कर पाएँगे।

धरोहर

नीला ने अपने बेटे की शादी के बड़े सपने संजोय थे अक्सर वो अपने पति नील से कहती थी मैं बहू को बिल्कुल अपनी बेटी की तरह रखूँगी आख़िर वो दिन भी आ गया जब नीला के इकलौते बेटे नभ की बड़े ही धूमधाम से शादी हुई। नीला बड़ी ख़ुश थी नई बहु रेशु का स्वागत बड़ी ख़ुशी ख़ुशी नीला ने किया। घर में रेशु के आने से रौनक़ आ गई पर जैसा नीला ने सोचा था बहू थोड़ी अलग थी नीला ने बहुत से सपने देखे थे अपनी बहू को लेकर पर रेशु बहुत ही आधुनिक विचारों वाली लड़की थी नीला इस वजह से कभी कभी उदास हो जाती तब नील उससे कहते तुम इतना मत सोचा करो अभी अभी तो हमारे बच्चों की शादी हुई है उन्हें इंजाय करने दो धीरे धीरे रेशु इस घर में घुलमिल जाएगी तुम देखना अब चिंता छोड़ो उन दोनों को कुछ वक़्त अपने तरीक़े से रहने दो नीला ने भी कहा आप सही कहते हैं धीरे धीरे वक़्त

बीतने लगा रेशु भी अपनी ज़िम्मेदारियाँ बख़ूबी निभा रही थी पर कहीं न कहीं उसे लगता कि नीला कुछ उदास रहती है एक दिन रेशु ने सोचा आज तो वो माँ की उदासी का कारण जान कर रहेगी पर जब वो कमरे गई तो देखा माँ उससे कुछ छुपा रहीं हैं वो वापस आ गई हिम्मत नहीं कर पाई कुछ भी पूछने की।

अब तो रेशु के बच्चे भी बड़े हो चले थे कृति बहुत नटखट थी वो दिनभर दादी के आगे पीछे घूमा करती नीला भी मन लगा रहता था कृति को अपनी दादी की पुरानी चीज़ें देखने में मज़ा आता था वो अपनी दादी की कभी साड़ी तो कभी ज़ेवर पहन कर बैठ जाती नीला कहती सब रख दे तेरी माँ को ये सब न भाए अभी चिल्लाएँगी पर वो कहा सुनने वाली थी भाग कर रेशु के पास आ गई माँ देखो ये कितना सुंदर है दादी का है रेशु भी कृति को बस देखती ही रह गई सच में कृति तुम बहुत सुंदर लग रही हो, दादी का है माँ दादी कह रही थी बाहर न जाना माँ डाँटेंगीं रेशु बोली अरे मैं क्यों डाँटूँगी तुझे तुम तो बड़ी प्यारी लग रही हो सब कुछ दरवाज़े पर खड़ी नीला सुन रही थी रेशु ने कहा माँ आजतक आपने मुझे नहीं दिखाया ये सब कितना अच्छा है मुझे तो पुरानी चीज़ों का बहुत शौक़ है माँ।

नीला की आँखों से आँसू निकल पड़े नीला ने रेशु से कहा मैं ये सब देना चाहती थी तुझे पर मुझे लगा तुम आधुनिक तौर तरीक़े से रहने वाली पता नहीं तुम्हें ये सब पसंद आएगा या नहीं बस यही सोचकर कभी न दे पाई। रेशु ने कहा माँ मैंने कई बार आपकी उदासी का कारण जानना चाहा पर हिम्मत नहीं जुटा पाई बस इतनी सी बात थी आप कह कर तो देखतीं इतना कहते कहते ही रेशु भी रो पड़ी नभ ने आकर दोनों का हाथ थामा भीतर से नील भी हाथ में एक बाक्स लेकर आए नीला को देते हुए कहा लो इतने वर्षों से जो तुमने सपने संजो रखे थे आज पूरा करने का समय आ गया रेशु ने ख़ुशी से हाथ बड़ा कर नीला को गले लगाया कहा माँ ये आपकी अमूल्य धरोहर है इसे मैं बहुत संभाल कर रखूँगी और हाँ माँ अब इसे कृश की बहू को दूँगी मैं।

कड़वा सच

रमा की शादी हुई तो एक छोटे से गाँव में थी पर उसका पति विकास बड़े शहर पूना में नौकरी करता था। रमा को विकास के बारे में ज़्यादा कूछ जानने का मौक़ा ही नहीं मिला क्योंकि सगाई के चंद दिनों बाद ही उसकी शादी हो गई। शुरू शुरू में विकास रमा को घुमाने ले जाता अच्छे से रहता पर बाद में वो अक्सर ऑफ़िस से नशे में धुत्त आता रमा कुछ भी कहती तो उसे गालियाँ देता इसी तरह समय बीत रहा था उसने सोचा सब ठीक हो जाएगा पर अब तो कभी कभी विकास उस पर हाथ भी उठाने लगे रमा की छोटी सी बिटिया भी हो चुकी थी पर विकास के अत्याचार बड़ रहे थे अब तो रमा भी तंग आ चुकी थी.... नन्ही सी बेटी बहुत बीमार हो गई पर विकास के ध्यान न देने की वजह से वो चल बसी रमा ने निर्णय लिया वो विकास को छोड़ देगी ससुराल वालों ने उसे बहुत समझाया पर रमा नहीं मानी रमा ने सिर्फ़ एक ही बात अपनी सास से कही माँ आज अगर मेरी जगह आपकी बेटी होती तो भी क्या आप उसे इसी तरह हर अत्याचार सह कर उसे उसके पति के पास मरने के लिए छोड़ देतीं नहीं न माँ तो फिर एक बेटी और बहु में फ़र्क़ क्यों ?

सच बहुत कड़वा था जिसका जवाब शायद किसी के पास नहीं।

संगति

कहते हैं 'संगति अच्छी हो तो सब अच्छा नहीं तो बिगड़ते देर नहीं लगती',

'पर ऐसा बिल्कुल नहीं अम्मा',.. कहती हुई अंदर से नीर आई ये क्या अम्मा तुम फिर शुरू हो गई, मैंने तुमसे कितनी बार कहा पर तुम मानती ही

नहीं, और हाँ! चाची आप भी कहा अम्मा की बातों में आती हो, ये तो ऐसे ही ख़ुद परेशान होती हैं और दूसरों को भी करती हैं,क्यों अम्मा सही कहा न?

अरे ! अभी तुझमें इतनी समझ नहीं है हमने यूँ ही धूप में बाल सफ़ेद नहीं किए नीर बेटा, तू समझती काहे नहीं है दुनिया बड़ी ख़राब है बेटा, शादी की उमर हो चली है उ बिटिया की पर उके लच्छन देखी हो बहुतई प्रपंची है। हमको उहका घर आना बिल्कुल पसंद नहीं, कितनी बार बोले हमरे घर न लाया करो, पर सुनती ही नहीं हो तुम,.. अरे 'गेहूँ के साथ घुन भी पिसता है' बिटिया।

नीर बोली 'अम्मा काहे चिंता करती हो किसी से प्यार करना कोई बुरी बात तो नहीं,उसकी बस यही ग़लती ये है न कि वो किसी से प्यार करती है पर ऐसा नहीं है कि हम भी किसी ग़लत राह पर चले जाएँगे। मीरा बहुत ही समझदार और अच्छी लड़की है। बस वो किसी को पसंद करती है, इसलिए उसे आप अच्छी नहीं समझती, पर आप उसके चरित्र पर उँगली नहीं उठा सकती अम्मा, और ग़लत भी क्या है अपनी पसंद से शादी करना कोई गुनाह नहीं।'

जब देखो तब सब मोहल्ले की औरतों को बुला कर दुनिया भर की बकवास करती रहती हो, यही समय किसी अच्छे काम में लगाओगी तो अच्छा है। बिगड़ना और सुधरना अपने आप पर निर्भर करता है अम्मा,.. 'और हाँ! चाची अम्मा के पास आके दूसरों की लड़कियों की बुराई ज़रा कम किया करो अपने घर बेटियों को तो सम्भाल लो पहले ज़रा देखो वो क्या गुल खिला रही है।' इतना कहकर हँसते हुए नीर बोली आती हूँ अम्मा मीरा के घर से,...।

संघर्ष

ये कहनी एक ऐसे परिवार की है जो सदियों से बेटियों की पढ़ाई के विरुद्ध रहा है और आज भी उसी परिपाटी में चल रहा है कि बेटियों को अधिक शिक्षित न किया जाए।

रमा एक पढ़े लिखे परिवार की शिक्षित लड़की है रमा और अतुल बचपन से ही एक दूसरे के दोस्त थे ये दोस्ती कब प्यार में बदल गई उन्हें पता ही नहीं चला उनकी मुलाक़ातों का सिलसिला बड़ता गया इस बात की ख़बर जब अतुल के पिता तक पहुँची तो वो ग़ुस्से से लाल पीले हो गए उन्होंने तुरंत ही अतुल को बुलाया और उसे ख़ूब फटकारा अतुल ने उन्हें ख़ूब समझाया रमा एक अच्छी लड़की है आपके मित्र की बेटी है फिर भी आपको हमारी शादी से एतराज़ क्यों है पिताजी जानी पहचानी भी है घर में सभी को पसंद भी फिर भी आप मना कर रहें है क्यों?

अतुल के पिता का सिर्फ़ एक उत्तर था नहीं। बोले मैं इसीलिए नहीं चाहता था की तुम पढ़ो पर तुमने ज़िद की मैंने तुम्हें पढ़ाया अभी रमा से शादी करनी है कल कहोगे मुझे ये दुकानदारी पसंद नहीं मैं नौकरी करूँगा मैंने एक बार कह दिया सो कह दिया। अतुल अपना सा मुँह लिए वहाँ से चला गया रमा के पिता ने रामबाबू (अतुल के पिता) को बहुत समझाया बड़ी मुश्किल से वो माने बड़ी धूम धाम से रमा और अतुल का विवाह सम्पन्न हुआ। रिया रमा की जेठानी की बेटी थी घर में रमा के आने से सबसे ज़्यादा ख़ुश वही थी क्योंकि वो पढ़ना चाहती थी और उसे अब पता था कि रमा उसका पूरा साथ देगी रमा ने घर पर ही अपनी जेठानी वीरा को पढ़ना सिखाया अब वीरा अपने अंगूठे की जगह हर दस्तावेज़ पर अपने हस्ताक्षर करने लगी थी रिया को भी पढ़ाई में मदद मिल जाती थी। धीरे धीरे रमा की बेटी बड़ी हो चली उसका नाम रमा ने शहर के बड़े स्कूल में लिखवाया इस

बात का पता जब अतुल के पिता को चला तो घर में मानो युद्ध ही छिड़ गया उन्होंने साफ़ साफ़ शब्दों में कह दिया बहु ये सब यहाँ नहीं चलेगा हमारे ख़ानदान में लड़कियों को पढ़ाया नहीं जाता बल्कि उन्हें घर के काम काज सिखा कर बिदा किया जाता है हमारे यहाँ न आज तक कोई बेटी पढ़ी है न पढ़ेगी। अतुल ने भी पिता को ख़ूब समझाया पर एक कहावत है न *भैंस के आगे बीन बजाए भैंस खड़ी पगुराय* पर वो नहीं माने। रमा ने भी सोचा परी अभी छोटी है अभी पास के स्कूल में ही देते है अचानक एक दिन किसी दस्तावेज़ पर रामबाबू ने वीरा के हस्ताक्षर देखे अब तो उनके ग़ुस्से का ठिकाना नहीं था उन्होंने पूरा घर सिर पर उठा लिया सभी को इकट्ठा कर लिया किसने सिखाया बड़ी बहू को ये सब रमा ने सोचा अब बहुत हुआ अब मैं बिल्कुल नहीं डरूँगी खुल कर पिता जी का सामना करूँगी रमा सामने आई और कहा मैंने सिखाया है भाभी को पढ़ना और हाँ पिताजी एक बात और मैंने ही माँ को पढ़ना सिखाया है मैंने ही आपकी चोरी से रिया का दाख़िला कॉलेज में करवाया है पढ़ाई के लिए इन सबने बहुत संघर्ष किया है अब और नहीं अब आपकी बिल्कुल नहीं चलेगी पढ़ाई कोई बुरी चीज़ नहीं है आज अतुल इतने पढ़े लिखे हैं इसलिए व्यापार इतना बड़ रहा है हमारा बहुत कहा सुनी के बाद सब चले गए अचानक ही एक दिन अतुल का देहांत हो रमा पर तो जैसे दुःख का पहाड़ टूट पड़ा पर रमा के लिए ये समय कमज़ोर पड़ने का नहीं था उसने बहुत हिम्मत से काम लिया कुछ ही दिनों में उसने फ़ैसला लिया की वो अब अतुल का बिज़नेस सम्भालएगी और उसने तय किया लाख कोई रोके पर अब वो नहीं रुकेगी।कमरे से निकली तो रामबाबू ने कहा कहा जा रही हो सुबह सुबह रमा ने कहा अब अतुल का काम मैं देखूँगी पिताजी उन्होंने बहुत मेहनत की है इस प्रोजेक्ट के लिए दिनरात एक कर दिया था अतुल ने मैं उनकी मेहनत यूँ जाया नहीं होने दूँगी। पिताजी के ख़िलाफ़ जाकर उसने अपनी बेटी का दाख़िला भी एक अच्छे स्कूल में करवाया अतुल का सारा काम भी सम्भाल लिया कड़ी मेहनत और पिताजी से संघर्ष कर

कामयाबी पे कामयाबी हासिल करती रमा पर आज स्वयं रामबाबू को गर्व हो रहा था ख़ुशी के आँसू रोके नहीं रुक रहे थे अब जो रामबाबू कभी रमा के ख़िलाफ़ थे आज ख़ुद उसके साथ खड़े थे देर ही सही पर अब वो समझ चुके थे कि बेटियाँ सिर्फ़ घर के ही नहीं बाहर के भी काम कर सकती है लिए पढ़ाई उतनी ही ज़रूरी है जितनी बेटों के लिए रमा कामयाब हुई भले ही उसे काफ़ी संघर्ष करना पड़ा।

संस्कार

बधाई हो भैय्या बधाई हो ..... उन लोगों को हमारी नीरजा पसंद आ गई कहती हुई बुआ आईं।

सब कुछ तो ठीक है भैय्या बस एक ही बात की चिंता है आपने अपने बच्चों को ज़रा अलग ढंग से पाला पोसा है, आपकी लड़कियाँ शहर में रहती है नीरजा को बताया या नहीं कि सीहोरा गाँव है बड़ा शहर नहीं है।

बाद में परेशानी न हो। आपकी लड़कियाँ हमेशा अकेले रहीं हैं सामुहिक परिवार में रह भी पाएगी या नहीं। रमेश ने कहा सारिका तुम चिंता मत करो। मैंने अपनी दोनों लड़कियों को बहुत अच्छी शिक्षा और संस्कार दिए है। भले ही हम यहाँ अकेले रहते हैं पर मुझे पता है मेरे बच्चे चार के बीच में भी रह सकते हैं तुम चिंता मत करो,..

भाभी सुना बहुत सर चढ़ा रखा है भैय्या ने उनसे जब भी बच्चों की बात करो यही जवाब रहता है। रहना तो हमें है नीरजा के साथ हमारा तो बहुत नाम है पूरे सीहोरा में बहुत इज़्ज़त है। हम तो अभी से कहे दे रहे हैं भाभी अभी भी दो महीना है शादी को समय है थोड़ा सिखा दो लड़की को

काम-काज, पूजा-पाठ नहीं तो वहाँ जाके हमाई नाक कटा दे। बस यही डर है हमें तो। ऐसा कुछ नहीं होगा दीदी आप बिल्कुल चिंता मत करो।

बड़े ही धूम धाम से नीरजा का विवाह सम्पन्न हुआ। बड़े नाजों से पली पापा की लाड़ली की बिदा हो ससुराल आगई। सब कुछ नया था उसके लिए। उसने कभी घर पर काम भी नहीं किया था। ये डर तो नीरजा के माता पिता को भी ता कि पता नहीं सब कुछ कैसे संभालेंगी। नीरजा जल्द ही सभी से घुल मिल गई बराबरी के देवर और नंद मिल गईं थी। थोड़ा लड़कपन था तो कभी कभी सास और जेठानी की सुनना भी पड़ती थी। पर एक बात अच्छी ये थी कि नीरजा की बुआ सास ने उसे गोल रोटी बनाना सिखा दिया था और साथ ही छोटे छोटे नुस्ख़े भी दे दिए रसोई के। जो। उसके बहुत काम आए। कुछ ही महीनों में नीरजा ने सब के दिल में अपनी अमिट छाप छोड़ दी। सभी बहुत बड़ाई करते चाहे खाना बनाने की हो या फिर व्यवहार की ।

जब भी कोई बुआ से मिलता सब कहते लड़की तो बड़ी अच्छी बताई है और नीरजा की बड़ाई करता बुआ का मन ख़ुश हो जाता और बस एक ही बात कहती बुआ हमारे भैय्या भाभी ने तो अपने बच्चों को बहुत अच्छे *संस्कार* दिए हैं। फ़ोन पर भी बहुत ख़ुश होकर कहती भैया सब नीरजा की बड़ी तारीफ़ करते हैं ! बहुत कम समय में अपनी नीरजा ने सबका दिल जीत लिया है।बहुत अच्छे संस्कार दिए हैं भैय्या तुमने अपने बच्चों को....!!!!

डर

नीतू.....देखो बेटा दरवाज़े पर कौन आया है कब से घंटी बज रही है, हाँ माँ देखती हूँ। कौन है बेटा कहती हुई रमा ख़ुद हाई किचन से बाहर आ गई।

अरे वाह तुम कब आईं रिया मुंबई से ! कल ही आई भाभी सोचा आपसे मिल लूँ, दो चार दिनों के लिए ही आई हूँ इस बार। ओह ....और कृतिका तुम कैसी हो यही रहती हो कहीं और कभी समय नहीं मिलता तुम्हें आने का सही कहा न। अरे नहीं भाभी ऐसा नहीं है .....बीच में ही रिया ने बात काटते हुए कहा हाँ भाभी सही कह रही हो दिन भर घर पर ही रहती है इसको किराना बोलती हूँ थोड़ा बाहर निकला करो सब से मिला जुला करो पर ये सुनती ही नहीं है क्यों रे कृतिका हा हा हा कर ठहाके गूँज उठे....

क्या कर रही हो आजकल तुम? कुछ नहीं भाभी पोस्ट ग्रेजुएशन हो गया है अभी तो कुछ नहीं कर रही हूँ घर पर ही हूँ।

अरे! क्यों भाई ......आपको तो अच्छी जॉब मिल सकती है ट्राई किया आपने। नहीं भाभी अभी तो कहीं नहीं किया। तुम बोलो तो मैं अपने स्कूल में बात करूँ पेमेंट भी अच्छी है हमारे स्कूल की।

नहीं नहीं भाभी ...

क्यों? क्या हुआ !

नहीं मुझसे नहीं होगा पढ़ाई छूटे भी काफ़ी समय हो गया, इनके जाने के बाद मैं कभी घर से भी नहीं निकली। वो तो रिया दी ने मुझे *पी जी* करवा दिया।मैंने कहा तो क्या हुआ अच्छा है न अब कम से कम तुम्हें किसी पे निर्भर नहीं रहना पड़ेगा। घर से बाहर निकलो,चार लोगों के साथ उठो बैठो मन भी बहलेगा।

नहीं भाभी डर लगता है पता नहीं माँ पापा को कहीं बुरा न लगे। डरती हूँ कोई क्या कहेगा बस यही सब सोचती हूँ। रिया बोली भाभी मैं तो थक गई समझा समझा कर ये है कि सुनती ही नहीं तुम कहो तो मैं बात करूँ अंकल आंटी से। तुम अब छोटे से गाँव में नहीं रहती कृतिका जहाँ कोई कुछ सोचेगा। तुम तो आज के समय की पढ़ी लिखी लड़की हो दिल्ली जैसे बड़े शहर में रहती हो आजकल कोई कुछ नहीं सोचता।आगे बड़ो पीछे मुड़कर नहीं देखो। अभी तुम्हारी उम्र ही क्या है। अपने डर को अपने ऊपर हावी मत होने दो। नीरू के बहुत समझाने पर कृतिका ने अपना मन बना लिया कह गई घर जा कर बताती हूँ भाभी ...!

रात भर कृतिका सो नहीं पाई इसी कश्मकश में थी क्या करूँ फिर उसका डर उसे सताने लगा कभी घर से बाहर नहीं निकली हूँ, कैसे कर पाऊँगी ये सब .. यही सोचते सोचते जाने कब सुबह हो गई उसे पता ही नहीं चला। वो उठी नहा धोकर तैयार हो गई।नाश्ते की टेबल पर रिया ने पूछा ही लिया क्या सोचा तुमने... कृतिका ने मुस्कुरा कर जवाब दिया हाँ दी मैं जॉब के लिए तैयार हूँ आप नीरू भाभी से बात कर लीजिए ,..!!!

व्यक्तित्व दर्पण

नाम	- अदिति रुसिया
जन्म	- 16.04.1972
शिक्षा	- बी.ए. (पं. रविशंकर युनिवर्सिटी)
माता	- श्रीमती मंजुला गुप्ता
पिता	- स्व.श्री सतीशचंद्र गुप्ता
पति	- श्री संजय रुसिया
पुत्र-पुत्री	- कार्तिक एवं कावेरी
कार्यक्षेत्र	- गृहणी
दायित्व	- राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य - मातृभाषा उन्नयन संस्थान। सलाहकार- अंतरा शब्द शक्ति (मासिक वेब पत्रिका)
प्रकाशन	- जीवन की धूप छाँव (काव्य संग्रह), विचार मंथन (साझा संकलन), पीर धरा की (काव्य संग्रह), गुमन आवाज (नारी से नारी तक), रिश्तों की धरोहर (कथा संग्रह) अंतरा शब्द शक्ति, लोकजंग एवं मातृभाषा में अनेक रचनाएं प्रकाशित।
सम्मान	- अंतरा शब्द शक्ति सम्मान, भाषा सारथी सम्मान, गुमन आवाज़ अवार्ड 2018।
उद्देश्य	- अपने मनोविचारों को लोगों तक पहुँचाना।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी।

मातृभाषा
www.matrubhashaa.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-86666-51-2

मूल्य- 40/-